डॉ. डी.एस (दौलतसिंह कोठारी) शोध व शिक्षा संस्थान

उदयपुर, राजस्थान (भारत)

डॉ. दौलतसिंह कोठारी
(6 जुलाई 1906 – 4 फरवरी 1993)

की पुनीत स्मृतियों को समर्पित

स्थापना : 2020

(पंजीयन क्र. 202003102400140)

डॉ. दौलतसिंह कोठारी

वैज्ञानिक, शिक्षाविद् एवं आधुनिक ऋषि

आरंभिक जीवन :

डॉ. दौलतसिंह कोठारी (डॉ. डी.एस. कोठारी) का जन्म 6 जुलाई 1906 को उदयपुर (राजस्थान) में एक जैन परिवार में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा उदयपुर तथा इन्दौर में हुई। 1928 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डॉ. मेघनाद साहा के निर्देशन में उन्होंने भौतिकी में अधिस्नातक की उपाधि प्राप्त की। डॉक्टरेट करने के लिए उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय, लंदन में दाखिला ले लिया और वहाँ नोबेल विजेता लॉर्ड अर्नेस्ट रदरफोर्ड के मार्गदर्शन में प्रसिद्ध केवेंडिश प्रयोगशाला में कार्य किया। विश्वविख्यात भौतिकविद् नील्स बोहर, पीटर कपिट्जा, जेम्स चैडविक और पैट्रिक ब्लैकेट डॉ. कोठारी के समकालीन थे तथा उनमें से कईयों ने आधुनिक भारतीय विज्ञान के विकास में डॉ. कोठारी के साथ कार्य किया। दाब आयनीकरण एवं श्वेत लघु तारों पर अपने शोध से डॉ. कोठारी को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा मिली।

पेशेवर जीवन :

डॉ. कोठारी ने 1934 से 1961 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर, आचार्य और भौतिकी विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया। भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय में प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में उन्होंने 1948 से 1961 तक अविस्मरणीय सेवाएँ दीं। उसके बाद 1961 से 1973 तक वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष रहे थे। 1963 में वे भारतीय विज्ञान सभा के स्वर्ण जयंती सत्र के अध्यक्ष रहे थे। 1973–74 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष के रूप में भी सेवाएँ दीं।

श्री कृष्ण मेनन एवं
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के साथ

डॉ. कोठारी ने 1964–66 के दौरान शिक्षा आयोग की अध्यक्षता की, जो अब कोठारी आयोग के नाम से जाना जाता है। इस आयोग की ऐतिहासिक रिपोर्ट से भारत में उच्च शिक्षा को

नया आकाश मिला। भारतीय रक्षा विज्ञान के शिल्पी डॉ. कोठारी ने देशभर में रक्षा अनुसंधान विकास संगठन की आरंभिक 12 प्रयोगशालाएँ स्थापित कीं। भारतीय रक्षा विज्ञान के विकास में उन सभी प्रयोगशालाओं की बुनियादी भूमिका है।

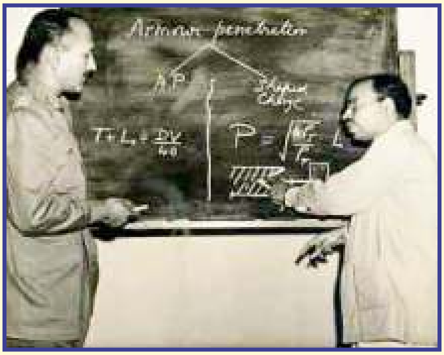

जनरल जे एन चौधरी एवं डॉ. डी.एस. कोठारी कवच भेदन क्षमता की विवेचना करते हुए

सम्मान :

भारत सरकार ने उनकी निष्ठापूर्ण लोकसेवा के लिए उन्हें 1962 में तृतीय सर्वोच्च नागरिक अलंकरण पद्मभूषण और विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए 1973 में द्वितीय सर्वोच्च नागरिक अलंकरण पद्मविभूषण से भी सम्मानित किया। 2011 में भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में पाँच रुपये मूल्यवर्ग का स्मारक डाक टिकट जारी किया। इनके अतिरिक्त उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मान मिले। उनके साथ जुड़कर हर सम्मान का यश और गौरव बढ़ जाता है।

पद्म भूषण अलंकरण (1962) ग्रहण करते हुए

दृष्टि :

डॉ. कोठारी को चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनके नेतृत्व व योगदान के लिए याद किया जाता हैं– वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा, रक्षा विज्ञान तथा मानवीय आध्यात्मिक मूल्य। भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये। उन व्याख्यानों के इस कथन में उनकी विराट् मानवीय दृष्टि अभिव्यक्त होती है–

भारत सरकार द्वारा पोस्टल स्टॉम्प

"विज्ञान हमारे युग की बड़ी वास्तविकता है। विज्ञान के माध्यम से प्रकृति को समझना और इसकी गहन समरसता को प्रकट करना मानव मन के लिए बहुत संतोशजनक है। समाज के रूपांतरण में विज्ञान की क्षमता अपार है, संभवतः किसी अन्य गतिविधि से भी अधिक है। साथ ही मानव के दुःख, भूख, पीड़ा, ध्वंस, हिंसा, अकेलापन तथा गहरी मनोव्यथा भी सर्वत्र व्याप्त हैं। यदि विज्ञान की सम्पूर्ण शक्ति मानवीय दुःख के निवारण में आयोजित नहीं की गई तो विज्ञान कष्टकारी और अंततः व्यर्थ हो जाएगा।"

नोबेल लोरेट प्रो. ब्लेकेट के साथ

नोबेल लोरेट प्रो. इल्या प्रिगोगाइन के साथ

भावांजलि

ऋषितुल्य जिया जीवन तुमने
सम्यक् चिंतन, सम्यक् विचार।
तुम प्रज्ञा के स्वर्ण शिखर,
तुम मूर्तिमान करुणावतार।

विज्ञान ज्ञान विद्या के तुम,
उज्ज्वल ज्योतिर्मय अलंकार।
तुम नए भागीरथ शिक्षा के,
तुम थे विकास के कर्णधार।

विद्या का मंत्र दिया तुमने,
जगमग भारत के व्याख्याता।
शिक्षा का तंत्र दिया तुमने,
नवयुग के तुम नव निर्माता।

करुणा–प्रज्ञा के सेतुबंध,
अध्यात्म दृष्टि के भाष्यकार।
तुम सृष्टि चेतना के दृष्टा,
चेतन मन के उपनिषद्कार।

था ज्ञान तुम्हारे दर्शन में,
दर्शन चरित्र का ही प्रमाण।
कथनी करनी में एक रहे,
तुम संस्कृति सस्पंद प्राण।

विधिवेत्ता, सांसद, मनीषी, लेखक और राजनयिक
डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी द्वारा
डॉ. कोठारी को समर्पित भावपूर्ण काव्यांजलि

नोबेल लोरेट नील्स बोर के साथ

प्रो. औलक, डॉ. कृष्णन व प्रो. डिराक के साथ

महामहिम राष्ट्रपति वी.वी. गिरी के साथ 'बाल विज्ञान प्रदर्शनी' के उद्घाटन पर

डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान

विज्ञान, तकनीक तथा इनके आर्थिक उपयोग व वाणिज्यिकरण ने संसार को अपूर्व तरीके और तीव्र गति से प्रभावित किया है। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप परिवर्तन की जो लहर चली थी, वह कुछ दशकों पूर्व तकनीकी और कंप्यूटर युग में कई गुना बढ़ गई। और अब तो स्वचालित प्रणाली, रोबोट, कृत्रिम बुद्धि, इंटरनेट आदि के कारण पलभर में आश्चर्यजनक तकनीकी और नैतिक परिवर्तन घटित हो रहे हैं।

विभिन्न तकनीकी उन्नतियों के कारण एक ओर अनेक प्रकार की सुख सुविधाएँ सुलभ हुई हैं तो दूसरी ओर पर्यावरण प्रदूषण तथा तकनीक के दुरुपयोग से कई समस्याएँ भी पैदा हो गई हैं। मानव की अंतहीन लालसाओं के कारण धरती की हरियाली और खुशहाली क्षीण हो रही है और मानवता का भविष्य अंधकारमय!

हालांकि तकनीक ने व्यापक यांत्रिक संपर्क को सुगम बनाया है, लेकिन यह सब जीवंत मानवीय सम्बन्ध, जीवन मूल्य और विश्व शांति की कीमत पर होना दुःखद है। तकनीकी और डिजिटल क्रांति के बीच एक ही देश में दो प्रकार के वर्ग बन गए हैं। पहला अल्पसंख्या में उन लोगों का समूह है, जिनकी पहुँच तकनीक तक है तथा उन्हें इसके उपयोग का ज्ञान भी है। दूसरा उन अधिसंख्य लोगों का समूह है, जिनकी तकनीक तक पहुँच नहीं है। अधिकांश लोग तो अभाव और भय में जी रहे और अपने अस्तित्व का संघर्ष कर रहे हैं।

शिक्षा, परिश्रम और नवीन तकनीकी—सामाजिक उपादानों को आत्मसात करके यह भेदभाव मिटाया जा सकता है। जीन संपादन, स्वचालन, छद्म ज्ञान आदि अज्ञात निष्पत्तियों के साथ उभरने वाली कुछ तकनीकी प्रणालियों के मूल्यांकन का यह उपयुक्त समय है। इसलिए इस सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए ऐसे प्रबंधन की आवश्यकता है, जिसमें नैतिकता और आध्यात्मिकता के आधारभूत सिद्धांतों पर भी बल दिया जाए।

महान व्यक्ति स्वयं ही उदाहरण बनकर समाज का मार्गदर्शन करते हैं। उनकी दिवंगति के बाद भी उनके आदर्श समाज को आलोकित करते रहते हैं। डॉ. दौलतसिंह कोठारी एक ऐसे ही महापुरुष थे। वे बेहद प्रतिभाशाली वैज्ञानिक, सर्वोच्च श्रेणी के शिक्षाविद् और सच्चे मानवतावदी थे। देशभक्ति और समाजोत्थान, विज्ञान और अहिंसा, शिक्षा और नैतिकता के उनके विचारों को आगे बढ़ाने की दिशा में डॉ. दौलतसिंह कोठारी संस्थान की स्थापना एक श्रेष्ठ एवं वांछनीय कदम है।

दृष्टि (विज़न) :

डॉ. कोठारी संस्थान को विज्ञान, समाज और अध्यात्म के त्रिकोण पर अकादमिक श्रेष्ठता और नवोन्मेषी शोध के साथ एक ज्ञान केन्द्र के रूप परिकल्पित किया गया है। यह संस्थान जगहितार्थ शांति व समरसता हेतु विवेकसम्मत व प्रामाणिक सोच एवं वैज्ञानिक भावना के विकास का प्रयास करेगा।

ध्येय (मिशन) :

डॉ. दौलतसिंह कोठारी के जीवन मूल्यों और वैज्ञानिक विचारों का अनुसरण करते हुए यह संस्थान एक ऐसे उपयुक्त मंच के निर्माण का प्रयास कर रहा है, जहाँ नवीन अनुसंधान के लिए सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञ अपने ज्ञान और अनुभव का आदान–प्रदान कर सकें। इस मंच से विज्ञान, समाज और अध्यात्म के त्रिकोण पर वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों के निवारण के लिए उपयोगी योजनाएँ बनाना और उन्हें क्रियान्वित करना भी शामिल है। यह संस्थान पारंपरिक जानकारियों की वैज्ञानिकता के आधार पर नवज्ञान की तलाश करेगा तथा उसे दर्शन, अध्यात्म और विज्ञान के सिद्धांतों की कसौटी पर कसेगा। उपयोगी ज्ञान विभिन्न संचार माध्यमों से उन तक पहुँचाया जाएगा, जिन्हें इसकी आवश्यकता है।

यह संस्थान एक गतिशील और प्रगतिशील संस्थान के रूप में प्रासंगिक सामाजिक विशयों पर शैक्षणिक कार्यक्रमों की पहल करेगा। संस्थान का मानना है कि विज्ञान और शिक्षा में वह क्षमता है, जिससे निरापद रूप से सर्वहित व सर्वोदय का सपना पूरा किया जा सके।

कार्य–संस्कृति :

- संस्थान की सेवाएँ सार्वभौमिक उपयोग के लिए होंगी।
- स्वैच्छिकता प्राथमिक सामाजिक आचरण होगा।
- जति, धर्म, वर्ग, लिंग से परे सबकी सहभागिता।
- सम्मान व सकारात्मक आचरण के साथ विवेकसम्मत चिंतन।
- कार्य व आचरण में सच्चाई और पारदर्शिता।
- विश्वकल्याण के लिए उत्कृष्टता, रचनात्मकता, शिक्षा और शोध का विकास।

विज्ञान और वैज्ञानिक चिंतन के माध्यम से सबकी भलाई के लिए यह संस्थान डॉ. दौलतसिंह कोठारी के जीवन–दर्शन और मूल्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक नियोजित प्रयास है।

उद्देश्य :

- विज्ञान, अध्यात्म और पारंपरिक ज्ञान पद्धतियों पर शोध तथा सामाजिक हित में उसे लागू करना।
- शिक्षा व संवाद के द्वारा समाज में वैज्ञानिक भावना के निर्माण की विधियों पर अनुसंधान।
- निर्धन बंधुओं को सहयोग एवं सहायता और ग्राम्य विकास के लिए विज्ञान और अध्यात्म के समन्वित उपयोग पर विशेष जोर देना।
- दैनिक जीवन में विज्ञान और अध्यात्म की साधना के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम करना।
- स्थानीय भाषाओं में प्रासंगिक साहित्य का प्रकाशन और वितरण।

निकट भविष्य में संस्थान की प्रस्तावित गतिविधियाँ

सामाजिक जागृति :

- विद्यालयों, महाविद्यालयों, सार्वजनिक मंचों आदि के माध्यम से डॉ. कोठारी के जीवन विचारों और योगदान पर चर्चा–वार्ता, व्याख्यान आदि रखना।
- डॉ. दौलतसिंह कोठारी से सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन और वितरण।
- उपयुक्त विज्ञान–प्रतिरूपों के माध्यम से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक भावना जगाना।
- विज्ञान और अध्यात्म तथा सम्बन्धित विषयों की पुस्तकों का एक पुस्तकालय बनाना।

अनुसंधान :

- मानवता के भौतिक, मानसिक और समग्र हित का पथ प्रशस्त करने के लिए विज्ञान और अध्यात्म को जोड़ने वाले साहित्य का अनुशीलन करना।
- आधुनिक विज्ञान और शास्त्रीय तत्वज्ञान की समानताओं की खोज पर शोध के लिए संगोष्ठियाँ और सम्मेलन आयोजित करना।

शिक्षा :

- विद्यालयों तक पहुँचना और प्रख्यात वैज्ञानिकों के जीवन और योगदान पर चर्चा–वार्ता करना।
- जरूरतमंद विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना।

संगठन :

- सदस्यता, आधारभूत सुविधाओं और संसाधनों के माध्यम से संस्थान को सुदृढ़ बनाना।
- विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के साथ सम्पर्क बनाना।
- विश्रुत महानुभावों को मानद् सदस्यता प्रदान करना।
- सुयोग्य व्यक्तियों को सलाहकार, संरक्षक आदि के रूप में मनोनीत करना।

संस्थान का संगठन

डॉ. कोठारी संस्थान एक पंजीकृत न्यास है, जिसमें 21 न्यासियों का प्रावधान है। न्यासीगण संस्थान और इसकी संपत्तियों व वित्त के अभिरक्षक तथा नीतिगत निर्णय की शक्तियों से युक्त हैं। वर्तमान में प्रबंध न्यासी डॉ. कुन्दनलाल कोठारी सहित इसके 14 न्यासी हैं। न्यास मंडल ने इंजीनियर श्री करणसिंह सामोता को सचिव मनोनीत किया है।

सदस्यता की अग्रांकित श्रेणियाँ रहेंगी– (1) आजीवन सदस्य, (2) वार्षिक सदस्य, (3) मानद् सदस्य, (4) विद्यार्थी सदस्य, और (5) संस्थागत सदस्य। योजनाएँ और उनका क्रियान्वयन निदेशक मण्डल की ओर से किया जाएगा, जिसकी नियुक्ति न्यास मंडल द्वारा अपने न्यासियों और आजीवन सदस्यों में से तीन वर्ष के लिए की जाएगी।

संस्थान परिवार

(30 जून 2021 तक)

न्यासीगण

डॉ. कुन्दनलाल कोठारी, प्रबन्ध न्यासी पूर्व अधिष्ठाता, राजस्थान कृषि वि.वि., उदयपुर, संस्थापक विज्ञान समिति

डॉ. एल.के. कोठारी, शरीर–विज्ञान के पूर्व आचार्य, जयपुर

डॉ. सुरेन्द्रसिंह पोखरणा, पूर्व वैज्ञानिक इसरो, अहमदाबाद

श्री यशवंत डागलिया, सी.ए, बैंगलोर

डॉ. यशवंतसिंह कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

डॉ. राजेन्द्र भंडारी, अभियंता, विशेषज्ञ आपदा प्रबन्धन

श्री बी.एस. कोठारी, उद्यान–विज्ञान विशेषज्ञ, उदयपुर

इंजी. आर.के. चतुर, पूर्व मुख्य अभियंता सिंचाई, उदयपुर, उत्कृष्ट समाजसेवी

इंजी. करणसिंह सामोता, पूर्व अतिरिक्त महाप्रबन्धक, एनटीपीसी, उदयपुर

श्री अभय श्रीश्रीमाल जैन, रसायन विज्ञानी एवं उद्योगपति, चैन्नई

डॉ. विनोद सुराणा चैन्नई–विधि विशेषज्ञ

डॉ. कनक मादरेचा, औद्योगिक अभियंता, विश्व शांति सलाहकार, दुबई

डॉ. राकेश बोहरा, दुबई, उद्योगपति

डॉ. तेजसिंह धाकड़, आचार्य, प्रबन्धन, यूएसए

आजीवन सदस्य

डॉ. कमल प्रकाश तलेसरा, पूर्व आचार्य भौतिकी, इंजीनियरिंग अधिष्ठाता, उदयपुर

इंजी. राजेन्द्र कुमार खोखावत, पूर्व विभागीय अभियंता, भारतीय संचय निगम लि., उदयपुर

डॉ. मनोहरलाल कालरा, पूर्व कुलपति, कोटा वि.वि., भौतिक शास्त्री, उदयपुर

डॉ. जी. नरेश कुमार, पूर्व आचार्य, जैव रसायन, बड़ौदा

श्री एस.सी.के. वेद, पूर्व ग्रुप जनरल मेनेजर खनिज प्रौद्योगिकी, पूर्व रसायन अभियन्ता, उदयपुर

श्री नरेन्द्र जोशी, बैंकिंग प्रबन्धन, समाज सेवी उदयपुर

श्री वर्धमान मेहता, बैंकिंग प्रबन्धन, समाज सेवी उदयपुर

श्री आर.के. नेभनानी, पूर्व अधीक्षण अभियन्ता, जल संसाधन

डॉ. दिलीप धींग, निदेशक अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, चैन्नई, हिन्दी साहित्य

श्रीमती मीना भंडारी, पारिवारिक संचालन

श्री महीपाल सिंघवी, सी.ए., सी.एस., ऑडिट, टेक्सेशन, यूएसए

श्री तारकेश्वर श्रीमाली, वास्तुशिल्पी

डॉ. के.एल. तोतावत, मृदा विज्ञानी, उदयपुर

श्री इब्राहिम अली, नागरिक अभियन्ता, उदयपुर, वन्डर सिमेंट

श्रीमती रश्मि सुराणा, विधि विशेषज्ञ तथा प्रबन्धन

श्री मनीष कुमार मेहता, सूचना प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिक अभियान्त्रिकी, चैन्नई
श्री राज लोढ़ा, उद्यमी, उदयपुर
श्री राजीव सुराणा, शिक्षा, उदयपुर
डॉ. महीप भटनागर, पूर्व अधिष्ठाता, विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर

मानद सदस्य

डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड, कुलपति महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
डॉ. राजीव जैन, कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी, कुलपति, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोयडा
डॉ. शिव सिंह सारंगदेवोत, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर

मानद निदेशक

डॉ. मनोहरलाल कालरा, निदेशक, अनुसंधान
डॉ. सुरेन्द्रसिंह पोखरणा, निदेशक, विस्तार
डॉ. के.पी. तलेसरा, निदेशक, शिक्षा व प्रकाशन
इंजी. आर.के. चतुर, निदेशक, सदस्यता
इंजी. करणसिंह सामोता, निदेशक, सूचना प्रबंधन
डॉ. कनक मादरेचा, निदेशक, अंतरराष्ट्रीय प्रसंग
डॉ. महीप भटनागर, निदेशक, विद्यार्थी विज्ञान कौशल विकास

परामर्शदाता

मुख्य सलाहकार – **डॉ. ललित कुमार कोठारी,**
शरीर–विज्ञान के पूर्व आचार्य, सवाई मानसिंह आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, जयपुर
डॉ. नरेन्द्र भंडारी, अंतरिक्ष विज्ञानी
सदस्य, भारतीय चन्द्रयान–1 मिशन, मंगल उपग्रह मिशन, नासा के अपोलो,
ओसिरिस रेक्स तथा यूएसएसआर की चन्द्र नमूना विश्लेषण टीम।
डॉ. ए.के. सिंघवी, एफएनए, डीएसटी इयर ऑफ साइंस चेयर,
आचार्य, भौतिक शोध प्रयोगशाला, अहमदाबाद
डॉ. दीपिका कोठारी, भौतिक विज्ञानी एवं लघु फिल्म निर्माता
डॉ. ओमप्रकाश चपलोत, चार्टर्ड एकाउंटेंट
डॉ. राजेन्द्र भंडारी, अभियन्ता आपदा प्रबन्धन तकनीकी विशेषज्ञ
डॉ. रवि वर्मा, पूर्व इसरो वरिष्ठ वैज्ञानिक
डॉ. रमेश के. अरोड़ा, जन प्रबन्धन

प्रवर्तक संगठन – विज्ञान समिति

डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान वर्तमान में विज्ञान समिति परिसर में स्थित है। एक यशस्वी स्वैच्छिक संगठन के रूप में विज्ञान समिति विगत 62 वर्षों से विज्ञान शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में अपनी निःस्वार्थ सेवाएँ अर्पित कर रही है। विज्ञान का लोकप्रियकरण, वैज्ञानिक भावना का विकास, ज्ञान का प्रसार, खेती–बाड़ी, आरोग्य, नारी सशक्तिकरण, वंचितों की आर्थिक उन्नति आदि क्षेत्रों में देशसेवा की विराट् भावना के साथ वरिष्ठ पादप–विज्ञानी डॉ. कुन्दनलाल कोठारी (डॉ. के.एल. कोठारी) ने 1959 में इस समिति की स्थापना की।

विज्ञान समिति गाँवों के विकास और उन्हें समर्थ बनाने के लिए गहराई से समर्पित है। इस उद्देश्य के लिए समिति अग्रणी विद्वानों, प्रशासनिक अधिकारियों, तकनीकी विशेषज्ञों और समाजसेवियों का सहयोग प्राप्त करती है। समिति की गतिविधियों और सामाजिक सेवाओं से डॉ. दौलतसिंहजी कोठारी बेहद प्रभावित थे तथा उनकी सक्रिय सहभागिता से प्रेरणा व प्रोत्साहन मिला। समिति परिसर में एक सभागार डॉ. डी.एस. कोठारी के नाम पर है।

कई वर्षों से समिति डॉ. दौलतसिंह कोठारी की प्रेरणादायी स्मृति में निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित कर रही हैं–

- प्रायोगिक तकनीक के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए राष्ट्रीय तकनीकी दिवस, 11 मई को प्रतिवर्ष 'डॉ. डी.एस. कोठारी उत्कृष्टता पुरस्कार' देना।
- विद्यार्थियों के लिए डॉ. दौलतसिंह कोठारी के जीवन और योगदान पर पुस्तिका प्रकाशित और वितरित करना।
- डॉ. दौलतसिंह कोठारी के जन्म दिन, 6 जुलाई को प्रतिवर्ष विज्ञान और अध्यात्म विषय पर संगोष्ठी आयोजित करना।
- विद्यार्थियों के लिए विज्ञान में निपुणता विकास हेतु वार्षिक प्रतियोगिता।

विज्ञान समिति डॉ. कोठारी संस्थान की स्थापना पर गौरव करती है तथा संस्थान का सार्थक व उद्देश्यपूर्ण विकास चाहती है।

उदयपुर
(झीलों की नगरी)

उदयपुर विश्वविख्यात मानवतावादी वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जन्मभूमि है तथा वे सदैव इससे भावनात्मक रूप से जुड़े रहे। राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी सांस्कृतिक क्षेत्र मेवाड़ में स्थित उदयपुर स्वतंत्रता, वीरता, दानवीरता, त्याग, भक्ति और अध्यात्म के लिए दुनियाभर में जाना जाता है। यहाँ महाराणा प्रताप, दानवीर भामाशाह, मीराबाई, पन्ना धाय जैसी विरल विभूतियों ने अपने उच्चतम आदर्शों के लिए अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किये।

झीलों की नगरी उदयपुर की स्थापना 1558 में राणा उदयसिंह ने की। यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, जो अपने ऐतिहासिक किलों, महलों, संग्रहालयों, कला–दीर्घाओं, कलात्मक मंदिरों, उद्यानों, प्राकृतिक छटाओं, पारंपरिक मेलों और लोक उत्सवों के लिए जाना जाता है। खनिज, संगमरमर, हस्तशिल्प, रसायन, इलेक्ट्रोनिक्स, पर्यटन आदि यहाँ की अर्थव्यवस्था को गतिमान बनाए रखते हैं।

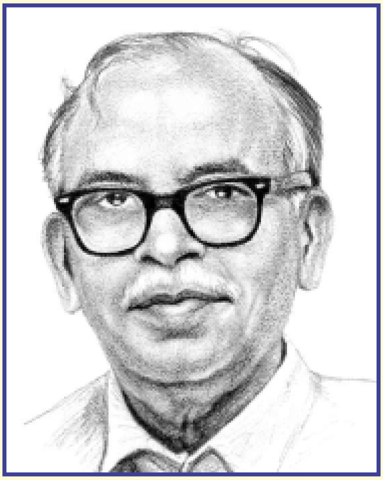

निवेदन

डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान की यह विवरणिका हम आपके अवलोकनार्थ सहर्ष प्रस्तुत करते हैं। हम संस्थान के विकास में आपकी सहभागिता की आकांक्षा रखते हैं तथा आपके मार्गदर्शन और सुझावों का स्वागत करते हैं।

डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान

विज्ञान समिति, 223, रोड़ नं. 17,
अशोकनगर, उदयपुर–313001
मोबाइल : 6376281514, 9461032422, 9825646519
फोन : 0294–2411650
ईमेल : dskireudaipur@gmail.com

हिंदी अनुवाद : डॉ. दिलीप धींग